

# प्रकृति पाठ पढ़ाती है...

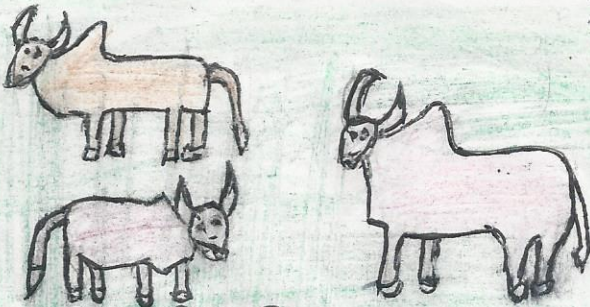
कविता

प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है,  
मार्ग वह हमें दिखाती है।  
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।



बही कहती है वही, वही  
जहां हो, पड़े व वहां रहो।  
जहां गंतव्य वहां जाओ,  
सुखता जीवन की पाओ।  
विश्व गूँथे ही तो जीवन है।  
अगति तो क्लृप्त कहती है।  
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

शील कहते हैं, शिखर पर्वो,  
उठो ऊंचे, तुम खूब तनो।  
ढोस आधार तुम्हारा हो,  
विशिष्टकरता सहारा हो,  
रही तुम सदा उद्विगाभी,  
उद्विता दुर्ग बनाती है।  
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।



वृक्ष कहते हैं खूब फलो,  
छाँव के पत्र पर सदा चलो।  
सभी को ही शीतल छाया,  
पुण्य है सदा काम आया।  
विवश से बिरहि सुशीलित है,  
अकड़ किसकी टिक पाती है।  
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

गही कहते रवि शशि चमको,  
प्राप्त कर उज्वलता हमको।  
अंधेरे से संग्राम करो,  
व खाली वैठी, काम करो।  
काम जो अच्छे कर जाते,  
भाह उबकी रह जाती है।  
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

Name ⇒ Sapna Kumari  
Class ⇒ V<sup>th</sup>

Sapna

Sapna Kumari